उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्याय पाँच

अर्थ की जटिलता

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2013 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., पो. बॉक्स 300769, फर्न पार्क, फ्लोरिडा 32730-0769 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1984 अंतरराष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मन्डारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 150 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय 1

II. शाब्दिक भाव 1

क. विविध अर्थ 2

ख. एकमात्र अर्थ 6

III. पूरा मूल्य 8

क. मौलिक अर्थ 9

ख. बाइबल निहित विस्तारण 10

ग. युक्ति संगत उपयोग 14

IV. सारांश 17

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया:
व्याख्या की नींव
अध्याय पाँच
अर्थ की जटिलता

परिचय

एक पुरानी कहावत बाइबल आधारित व्याख्याशास्त्र अर्थात् भाष्यतंत्र विज्ञान की चर्चाओं में अक्सर सामने आ जाती है। इसमें ऐसा कुछ कहा गया है कि, "एक वाक्य में केवल एक ही अर्थ होता है, परन्तु उस अर्थ के कई उपयोग होते हैं।" उदाहरण के लिए, बाइबल हमें, बिल्कुल सीधे इस तरह के निर्देशों का एक नमूना देती है कि, "अपने पड़ोसी को प्रेम करो।" परन्तु हमें इस निर्देशों को अपने जीवन में कई विभिन्न तरीकों से लागू करने की आवश्यकता है जब हम अपने पड़ोसियों के साथ विभिन्न तरीकों से विभिन्न परिस्थितियों में व्यवहार करते हैं।

अब, जब बात पवित्रशास्त्र की व्याख्या की आती है, तो यह अंतर्दृष्टि के रूप में ज्यादा से ज्यादा उपयोगी हो सकती है, हमें इस बात को स्वीकार करना चाहिए कि बाइबल के प्रत्येक संदर्भ का अर्थ जटिल या बहुमुखी अर्थों वाला होता है। इसलिए यह कहने की बजाए "एक वाक्य में केवल एक ही अर्थ है, परन्तु इसके कई उपयोग हैं," कुछ इस तरह से कहना कि, "एक वाक्य में केवल एक अर्थ होता है, परन्तु उस एक अर्थ के कई आंशिक सार होते हैं। और इसमें कई और उपयोगी बातें जीवन में लागू करने के लिए होती हैं," ज्यादा सहायतापूर्ण होगा। बाइबल के प्रत्येक संदर्भ का एक अर्थ इतना ज्यादा जटिल होता है कि हमें यह सीखना चाहिए कि इसे कई विभिन्न तरीकों से कैसे सारांशित किया जाए, और फिर इसे कैसे हमारे जीवन में लागू किया जाना चाहिए।

यह *उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव* के ऊपर हमारी श्रृंखला का पाँचवाँ अध्याय है। हमने इस अध्याय का शीर्षक "अर्थ की जटिलता" दिया है क्योंकि हम इसमें उन तरीकों की खोज करेंगे जिसमें सदियों से मसीही विश्वासियों ने बाइबल के संदर्भों के अर्थ के लिए विभिन्न तरह के प्रकारों और अर्थ की सँख्याओं को जिम्मेवार ठहराया है।

बाइबल में अर्थ के लिए हमारी जटिलता पर हमारी चर्चा को हम दो भागों मे विभाजित करेंगे। सबसे पहले, हम उस ओर देखेंगे जिसे अक्सर व्याख्याकार पवित्रशास्त्र का "शाब्दिक भाव" कहते हैं। और दूसरा, हम हमारे ध्यान को एक मूलपाठ के पूर्ण मूल्य पर निर्धारित करेंगे, जो कि विभिन्न तरीकों से शाब्दिक भाव से बहुत परे जाकर विस्तारित है। आइए हम सबसे पहले पवित्रशास्त्र के शाब्दिक भाव की ओर मुड़ें।

शाब्दिक भाव

शब्दावली "शाब्दिक भाव" को कई बार लैटिन अभिव्यक्ति में *सेन्सुस लिटरालिस* कह कर पुकारा जाता है, जिसे अक्सर हमारे दिनों में "शाब्दिक व्याख्या" की शब्दावली से उलझा दिया जाता है। बाइबल को समझने के लिए "शाब्दिक व्याख्या" ठोस या यान्त्रिक पद्धतियों की ओर संकेत करती है। परन्तु ऐतिहासिक तौर पर, शब्दावली "शाब्दिक व्याख्या" का सदैव अर्थ बहुत अधिक सीमा तक जिसे इवैन्जेलिकल्स अर्थात् सुसमाचारवादियों ने किसी एक संदर्भ के "मूल अर्थ" या "व्याकरणीय-ऐतिहासिक अर्थ" कह कर पुकारा है, से सम्बन्धित है।

शाब्दिक भाव पवित्रशास्त्र के वाक्यों और शब्दों को लेखक के अभिप्रायों और उनके मूल श्रोताओं के ऐतिहासिक संदर्भ के अनुसार लेते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

यह पवित्रशास्त्र में दी हुई विभिन्न शैलियों पर ध्यान देते हैं। यह बोलने वाले चरित्रों जैसे उदाहरण के तौर पर कुछ – रूपकों, उदाहरणों, उपमाओं, और अतिशयोक्तिओं को स्वीकार करते हैं। यह इतिहास को इतिहास के रूप में, कविता को कविता के रूप में, नीतिवचन को नीतिवचन के रूप में, और अन्य बातों को ऐसे ही लेते हैं।

बाइबल की पुस्तकों की विभिन्न शैलियों की एक सँख्या है, और उन शैलियों की विभिन्नताओं को समझना अति महत्वपूर्ण है ताकि हम उन्हें समझ सकें और उनकी उचित तरीके से व्याख्या कर सकें। हम नहीं समझते कि सभी शैलियाँ एक ही कार्य को एक ही तरीके से कर रही हैं। इस लिए बाइबल की पुस्तकों की शैली पर ध्यान केन्द्रित करने और समझने के द्वारा, हम पुस्तकों को यह अनुमति देते हैं कि वे अपनी कार्यसूची को स्वयं निर्धारित करें कि कैसे हमें इन पुस्तकों की व्याख्या करनी चाहिए।

-डॉ ब्रांडोन क्रोवी

जब हम देखते हैं कि बाइबल के एक संदर्भ का शाब्दिक भाव पृष्ठ पर लिखे हुए के अपेक्षाकृत बहुत ज्यादा लिखा गया है, तो हम प्रत्येक संदर्भ के *सेन्सुस लिटरालिस* की जटिलता कैसी होगी के प्रति जागरूक होने लगते हैं। लेखकों के अभिप्राय बहुआयामी अर्थों वाले हो सकते हैं। शैली पर ध्यान एक संदर्भ के अर्थ को जटिल बनाता है। बोलने वाले पात्र और ऐसे ही अन्य पात्र कई अन्य बातों को ध्यान में रखने का परिचय देते हैं। ये तथ्य बाइबल के प्रत्येक संदर्भ के मूल अर्थ की कई गुना पेचीदगियों को प्रकट करते हैं। और इन जटिलताओं ने कई सही-अर्थ निकालने वाले मसीही विश्वासियों को पवित्रशास्त्र के अर्थ को विभिन्न तरीकों से निकालने की पद्धतियों के लिए नेतृत्व दिया है।

पूरे इतिहास में, मसीही विश्वासियों ने लगभग सर्वसम्मति से शाब्दिक अर्थ या बाइबल के मूल अर्थ को खोजने की आवश्यकता की पुष्टि की है। परन्तु कई अन्य आवाजें भी हैं जो यह तर्क देती हैं कि पवित्रशास्त्र का अर्थ इतना जटिल है कि यह शाब्दिक भाव के शीर्षक के अंतर्गत पर्याप्त रूप से सारांशित नहीं किया जा सकता है। इसलिए, हमारे अध्याय के इस भाग में, हम शब्दावली "शाब्दिक भाव" के इतिहास को खोजेंगे, ताकि हम यह देखें कि कैसे शाब्दिक भाव, उचित रूप से समझ लिया गया है, जो हमें पवित्रशास्त्र के जटिल अर्थ की जाँच-पड़ताल करने और वर्णन करने में सहायता कर सकता है।

हम पवित्रशास्त्र में अर्थ की जटिलता के लिए दो मुख्य तरीकों को देखेंगे जो कि इसके शाब्दिक भाव के साथ सम्बद्ध हैं। सबसे पहले, हम यह देखेंगे कि मसीह के कुछ अनुयायियों ने यह कहा है कि शाब्दिक भाव पवित्रशास्त्र के कई अर्थों में से मात्र एक अर्थ है। और दूसरा, हम अपने ध्यान को इस विचार के ऊपर केन्द्रित करेंगे कि शाब्दिक भाव बाइबल का एकमात्र अर्थ है। आइए सबसे पहले हम इस मान्यता को देखें जिसमें शाब्दिक अर्थ को ही पवित्रशास्त्र के कई अर्थों में से एक अर्थ माना गया है।

कई अर्थ

आरम्भिक कलीसिया में, पवित्रशास्त्र के कई अर्थात् विविध अर्थ हैं, का विचार काफी व्यापक सीमा में व्याख्याशास्त्र के रूपकात्मक अर्थात् अन्योक्तिपरक वाली पद्धतियों के परिणामस्वरूप आया। रूपक पद्धति एक ऐसी पद्धति है जो कि पवित्रशास्त्र में वर्णित ऐतिहासिक लोगों, स्थानों, चीजों और घटनाओं की व्याख्या इस तरीके से करती है, जैसे कि मानो वे आत्मिक सच्चाइयों के चिन्ह या प्रतीक थे। हो सकता है कि एक पेड़ एक राज्य तो प्रस्तुत करता हो, एक युद्ध पाप के साथ आन्तरिक संघर्ष को प्रस्तुत करता हो, और ऐसा अन्य बातों के साथ हो। रूपकात्मक व्याख्याओं में, बाइबल में वर्णित लौकिक वास्तविकतायें कार्य कर रही होती हैं, और जिन्हें महत्वहीन या झूठ कहकर निरस्त नहीं किया जा सकता है। और इन लौकिक वास्तविकताओं की ओर से प्रतिनिधित्व किए गए विचार पवित्रशास्त्र में अति महत्वपूर्ण विषयों के रूप में व्यवहार किए जाने की प्रवृति रखते हैं।

मसीही विश्वास में रूपकात्मक दृष्टिकोण को कई बार अलेक्जेंड्रिया के यहूदी विद्वान फिलो से पता लगाया जाता है, जो कि लगभग 20 ई. पूर्व., से कदाचित् 50 ई. सन्., के मध्य रहे। फिलो ने मसीही विश्वास में रूपकात्मक पद्धतियों की नींव को इब्रानी पवित्रशास्त्र को रूपकों के रूप में देखते हुए रखा जो कि उच्च आत्मिक सत्य को प्रकट करते थे।

फिलो के बाद में, कलीसिया की प्रारम्भिक शताब्दियों के मध्य, प्रसिद्ध मसीही विद्वानों ने बाइबल के पुराने और नए नियम की व्याख्या करने के लिए इसी के समान एक दृष्टिकोण को अपनाया। यह विशेषकर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अलेक्जेंड्रिया के धर्मशिक्षाशास्त्र सम्बन्धी विद्यालयों के साथ सत्य था, जिनमें धर्मशास्त्र के विद्यार्थियों को धर्मविज्ञान और बाइबल की व्याख्या करने की शिक्षा दी जाती थी।

धर्मशिक्षाशास्त्र सम्बन्धी विद्यालय का एक बहुत अधिक प्रसिद्ध शिक्षक ओरेगन था, जो कि 185 ई. सन्., से लगभग 254 ई. सन्., के मध्य रहा। ओरेगन ने पवित्रशास्त्र के अर्थ को दो श्रेणियों में विभाजित किया था: शाब्दिक भाव और आत्मिक भाव। 2 कुरिन्थियों 3:6 में से व्यवस्था को शब्द और आत्मा के मध्य पौलुस की विभिन्नता में से रेखांकित करते हुए, ओरेगन ने यह कहा कि पवित्रशास्त्र के प्रत्येक संदर्भ के अर्थ के दो मुख्य प्रकार होते हैं: मूलपाठ का शब्द और मूलपाठ की आत्मा। "शब्द" के द्वारा ओरेगन का अर्थ अपने व्याकरणीय संदर्भ में शब्द के स्पष्ट अर्थ से है। और मूलपाठ की "आत्मा" के लिए, उसका अर्थ इसके चित्रित भाव से था – अर्थात् वह जो शब्दों के स्वयं के स्पष्ट भावना से परे चला गया हो। ओरेगन ने मूलपाठ के शब्द को इसके शाब्दिक अर्थ की समानता में रखने की कोशिश की, और उसने शाब्दिक अर्थ के अधिकार का बचाव किया। परन्तु इसके साथ ही, ओरेगन ने यह बहस की कि परिपक्व, आत्मिक विश्वासियों को पवित्रशास्त्र के आत्मिक भाव को प्राप्त करने के लिए शाब्दिक अर्थ से सदैव परे देखना चाहिए।

उदाहरण के लिए अपने लेख *प्रथम सिद्धान्तों के ऊपर* अर्थात् ऑन फर्स्ट प्रिन्सिपल्स, की पुस्तक 4, के अध्याय 1, के भाग 16 में, ओरेगन यह तर्क देता है कि उत्पत्ति 1 और 2 में सृष्टि की कहानियाँ तर्क के विपरीत हैं, और इसलिए मसीहियों को चाहिए कि वे इनके शाब्दिक भाव पर ध्यान न दें और गहन आत्मिक अर्थों को देखें। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि, ओरेगन की रूपकात्मक पद्धति की पूरे इतिहास में कई बार आलोचना की गई है। परन्तु उसके दृष्टिकोण का अभी भी आरम्भिक मसीहियों के व्याख्याशास्त्र के निर्देशन में महत्वपूर्ण रूप से प्रभाव था।

> **कुछ प्राचीन व्याख्याकार जैसे जॉन क्रिस्सोटोम में बाइबल के आख्यानों जैसे की प्रेरितों के काम की पुस्तक के ऊपर कुछ प्रतिभाशाली अंतर्दृष्टियाँ हैं, और उसने इन्हें और ज्यादा शाब्दिक तरीके से पढ़ने की कोशिश की है। जिस तरह से हम साधारण रूप से आख्यानों को पढ़ते हैं, हम उसे सुनने की कोशिश करते हैं कि आख्यान क्या कह रहा है और हम इससे सबकों या नैतिक मूल्य को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। आपके पास ओरेगन जैसे अन्य व्याख्याकार भी हैं जो इन्हें रूपकात्मक तौर पर व्याख्या करने की प्रवृत्ति रखते हुए, इन्हें प्रतीकों की श्रृंखलाओं में परिवर्तित कर देते हैं, और इस तरह की पद्धति का खतरा यह है कि यह वह तरीका नहीं है जिसमें बाइबल हमारे समझने के लिए लिखी गई थी। आपके पास वास्तव में यह पद्धति यूनानी दार्शनिकों से आई है जो कि पुरानी मिथकों की व्याख्या करने की कोशिश कर रहे थे, पुराने मिथकों में परेशान करने वाली बात यह है कि कई बार इस तरह की पद्धति को बाइबल पर लागू करना इसकी सीमाओं से परे चली जाती है। वे और अधिक यह सुनने की कोशिश नहीं कर रहे हैं कि मूलपाठ ने स्वयं में क्या कहा। वे इससे और ज्यादा प्रेरणा प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं, एक अर्थ में, इसमें से कुछ और ही पढ़ने के द्वारा। उसी समय, यहाँ तक कि कई बार इसी तरह से ओरेगन के पास कुछ वास्तविक अच्छी अंतर्दृष्टियाँ रही हैं।**
>
> **- डॉ क्रेग एस. किन्नर**

ओरेगन की प्रवृत्ति में बाइबल के आत्मिक या रूपकात्मक दृष्टिकोणों के प्रति आरम्भिक कलीसिया के ऊपर नव-अफलातूनवाद का प्रभाव दिखाई दिया। इस दृष्टिकोण में, पवित्रशास्त्र परमेश्वर की ओर से आया है जो कि पवित्र अलौकिक आत्मा है। और जिसके परिणामस्वरूप, यह स्वीकार कर लिया गया था कि पवित्रशास्त्र वास्तव में लौकिक संसार के बारे में कुछ भी शिक्षा नहीं देता है। तत्व अपनी प्रकृति के कारण स्वयं में बुरा था। इसलिए जब पवित्रशास्त्र लौकिक वस्तुओं के बारे में संकेत करता है जो कि इतिहास में प्रकट हुई, तो वह वास्तव में स्वर्गीय, आत्मिक सच्चाइयों की ओर संकेत करता है जो कि रूपकात्मक रूप में समझी जा सकती हैं। पवित्रशास्त्र का वास्तविक अर्थ, इस दृष्टिकोण में, इन महान् आत्मिक सच्चाइयों में था, और इन सच्चाइयों को समझना बाइबल की व्याख्या का उच्चतम लक्ष्य था।

दुर्भाग्य से, बहुत से मसीही धर्मशास्त्रियों ने इन्हीं धारणाओं को अपनाया है। और जब वे इन्हें व्यवहार में लाए, तो उन्होंने बाइबल के लौकिक संसार की सामग्रियों के साथ गंभीर समस्याओं का सामना किया। पुराना

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

नियम ऐसी बातों के ऊपर अपना ध्यान केन्द्रित करता है जैसे: ब्रह्माण्ड की रचना, परमेश्वर के लोगों के जीवनों में संसारिक आशीषें, इस्राएल का मिस्र की गुलामी से लौकिक छुटकारा, और परमेश्वर के लोगों के लिए प्रतिज्ञात् भूमि के ऊपर एक पार्थिव राज्य की स्थापना का किया जाना। और नया नियम यीशु के जीवन और प्रेरितों के जीवनों की लौकिक घटनाओं के ऊपर अपने ध्यान को केन्द्रित करता है। वे मसीही विश्वासी जो कि नव-अफलातूनवाद से प्रभावित हैं, उनके लिए इन इतिहासों के भौतिक पहलू समस्याग्रस्त थे, क्योंकि उन्होंने भौतिक संसार को परमेश्वर की अच्छी सृष्टि के रूप में प्रस्तुत किया। इसलिए, उन्होंने रूपकात्मक व्याख्या की पद्धतियों को बाइबल और नव-अफलातूनवादी दर्शनशास्त्र को आपस में सामंजस्य के लिए एक साधन के रूप में उपयोग किया। उनके व्याख्याशास्त्रीय दृष्टिकोण बाइबल में वर्णित भौतिक वास्तविकताओं के आधार के रूप में कार्य किए, और इन्होंने मसीही विश्वासियों को प्रोत्साहित किया कि वे गहन आत्मिक सच्चाइयों की ओर देखें जिनकी शिक्षा देना इनका उद्देश्य है।

पवित्रशास्त्र के आत्मिक भाव को पता लगाया गया और विभिन्न तरीकों से एक संख्या में वर्गीकृत किया गया। एक प्रभावशाली दृष्टिकोण *क्वाड्रिगा* – चार घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले एक रोमन रथ के लिए उपयोग किए जाने वाले एक लैटिन शब्द के नाम से जाना जाता था। एक क्वाड्रिगा की छवि को पवित्रशास्त्र पर यह संकेत करने के लिए उपयोग किया गया था कि पवित्रशास्त्र चार विभिन्न अर्थों से सुसज्जित था।

जॉन कैसियन, जो लगभग 360 से लेकर 435 ई. सन., के मध्य रहा, अपने साहित्य *कान्फ्रेंस,* कान्फ्रेंस 14, अध्याय 8 में इस दृष्टिकोण का कुछ वर्णन देता है। कैसियन ने मूल रूप से ओरेगन के आत्मिक और शाब्दिक भावों के बीच में भिन्नता का ही अनुसरण किया है। परन्तु वह इससे आगे की ओर तीन तरह के आत्मिक अर्थों को पहचानने के लिए चला गया है: रूपकात्मक भाव, जो कि किसी एक संदर्भ का सैद्धान्तिक शिक्षण था; लाक्षणिकात्मक भाव, जो कि किसी एक संदर्भ से नैतिक शिक्षण को प्राप्त करना था और रहस्यात्मक भाव, जो कि किसी संदर्भ में स्वर्ग और युगान्तशास्त्रीय मुक्ति के बारे में शिक्षण था।

उदाहरण के लिए, क्वाड्रिगा के अनुसार, जब बाइबल का कोई एक प्रसंग "यरूशलेम" के बारे में उल्लेख करता है, तो इस संदर्भ को चार तरीकों से समझा जा सकता है। इसके शाब्दिक अर्थ में यह इस्राएल की पुरातन राजधानी है। रूपकात्मक भाव में, यह कलीसिया के मसीही धर्म सिद्धान्त की ओर संकेत करती है। लाक्षणिकात्मक भाव में, यरूशलेम या तो एक विश्वासयोग्य विश्वासी होगा या फिर मानवीय प्राण की नैतिक गुणों की ओर संकेत करती है। और इसके रहस्यात्मक भाव में, यह प्रकाशितवाक्य में वर्णित स्वर्गीय शहर हो सकता है।

अब यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि सदियों से बाइबल के व्याख्याकारों ने इस बात पर बहस की है कि बाइबल के एक प्रसंग के आत्मिक अर्थ को कितनी निकटता से इसके शाब्दिक अर्थ के साथ जुड़ा हुआ होना चाहिए। कुछ यह तर्क देते हैं कि सभी अर्थ विशेष रूप से शाब्दिक अर्थ के साथ जुड़े हुए हैं, परन्तु अन्य लोग यह कहते हैं कि मूलपाठ का प्रत्येक भाव अन्यों से अलग होते हुए स्वयं पर निर्भर था। और वे इसके छिपे हुए आत्मिक अर्थ से आग्रह करते हैं, जिसका शाब्दिक भाव से कोई लेना देना नहीं है।

बस केवलमात्र एक उदाहरण के रूप में, प्रभावशाली फ्रेंच धर्मशास्त्री क्लैरवाऊक्स के बर्नार्ड, जो कि 1090 से 1153 के मध्य में रहे, ने पवित्रशास्त्र की कुछ तीव्र कल्पनाशील व्याख्याओं को बढ़ावा दिया जिसने इनके आत्मिक अर्थों को इनके शाब्दिक अर्थों से बिल्कुल अलग ही कर दिया। उदाहरण के लिए, सुलैमान के श्रेष्ठगीत के लिए उसकी व्याख्या मूलपाठ के शाब्दिक अर्थ के साथ पूरी तरह से असम्बन्धित थी।

श्रेष्ठगीत 1:17 के इन शब्दों को सुनिए:

हमारे घर के धरन देवदार हैं, और हमारी छत की कड़ियाँ सनौवर हैं (श्रेष्ठगीत 1:17)।

जब हम इस प्रसंग को इसके ऐतिहासिक संदर्भ में पढ़ते हैं, तो यह देखना कठिन नहीं होता है कि यह वास्तव में सुलैमान के महल का विवरण है। इसने राजा के ध्यान को उसके राजकीय निवास के आश्चर्य पर केन्द्रित करते हुए उसको ऊँचा किया।

परन्तु क्लैरवाऊक्स के बर्नार्ड ने शाब्दिक, व्याकरणीय-ऐतिहासिक भाव को इस वचन पर उसकी व्याख्या को नियंत्रित करने के लिए अनुमति नहीं दी। उसके दृष्टिकोण के अनुसार, यह प्रसंग वास्तव में आत्मिक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

वास्तविकताओं को चिन्हित करता है। निवास स्वयं परमेश्वर के लोगों को प्रस्तुत करता है। और निवास के धरन और कड़ियाँ कलीसिया के अधिकारियों के प्रतीक हैं। वह आगे यह कहता है कि यह आयत कैसे यह शिक्षा देती है कि कलीसिया और राज्य को एक दूसरे के साथ मिलकर कैसे कार्य करना चाहिए। बर्नार्ड ने जिन आत्मिक अर्थों को इस प्रसंग में से सिखाया है, वे इसके शाब्दिक भाव से प्रकट नहीं होते, या यहाँ तक कि इसके साथ इसका कोई समन्वय स्थापित नहीं करते हैं।

> **मार्टिन लूथर, उत्पत्ति के ऊपर अपने व्याख्यानों में, व्याख्या की इस रूपकात्मक शैली के बारे में बात करता है – और रूपकात्मक के द्वारा, मेरे कहने का अर्थ यह नहीं है कि लेखक का इच्छित रूपक अपितु एक मूलपाठ की बात करना और इसका इस तरह से रूपकीय अर्थ निकलना जिसकी इच्छा लेखक ने नहीं की है। और वह यह कहता है कि उसकी जवानी में, उसकी जवानी के दिनों में, लूथर यह कहता है कि, मैं ऐसा करने में भी बहुत अच्छा था, और मैंने ऐसा करने में बहुत अधिक प्रशंसा को प्राप्त किया। परन्तु ऐसा करना पवित्रशास्त्र के साथ विश्वासयोग्यता नहीं है। कॉल्विन भी इस तरह के रूपकीय अर्थ को निकाले जाने के बारे में बोलता है और वह कहता है कि ऐसा करना पवित्रशास्त्र के तर्क के विरूद्ध जैसा है और आप इसे उस तरफ मोड़ सकते हैं जिस तरफ व्याख्याकार चाहता है इसकी अपेक्षा कि लेखक के प्रति विश्वासयोग्य रहा जाए... परन्तु फिर भी, मैं यह सोचता हूँ कि कलीसियाई धर्माचार्यों के लेखों का पठन् करना मूल्य रखता है, और यह स्पष्ट है कि लूथर ने उनको पढ़ा होगा, यहाँ तक कि उनकी आलोचना भी की होगी। हम उनसे सीखते हैं, यहाँ तक कि जब वे अक्सर अवैध रूप से सच्चे धर्मसिद्धान्तों को लेते हैं और उन्हें मूलपाठ में डाल देते हैं जो कि वैसा नहीं बोल रही होती है, हम समझते हैं कि वे क्या कहने की कोशिश कर रहे हैं। वे हमें समझाने की कोशिश कर रहे हैं कि पुराने नियम की कैसे व्याख्या की जाती है और उसे मसीही विश्वासियों के लिए प्रासंगिक बनाया जा सकता है, यहाँ तक वे, मैं सोचता हूँ, हम कह सकते हैं कि, अक्सर वे कई बार इससे दूर चले गए थे। इस तरह से हम सीखते हैं कि कैसे पवित्रशास्त्र की व्याख्या की जाती है। और सम्पूर्ण कलीसियाई इतिहास में भी कई अन्य विश्वासयोग्य उदाहरण हैं जिन्हें हम उनसे सीखते हैं।**
>
> **- डॉ राबर्ट एल. प्लुमेर**

यह विचार कि पवित्रशास्त्र के कई अर्थ हैं, ने समकालीन संसार में व्यापक रूप से स्वीकृति को भी प्राप्त किया है परन्तु ज्यादात्तर कई विभिन्न कारणों से। यह तर्क देने की अपेक्षा की परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र को कई स्तरों पर सम्प्रेषित करने के लिए रूपरेखित किया है, कई आधुनिक व्याख्याकार यह विश्वास करते हैं कि बाइबल के कई अर्थ इसकी भाषा की अस्पष्टताओं में निहित हैं। वे तर्क देते हैं कि भाषा इतनी ज्यादा अस्पष्ट है कि इसका संक्षेप में कोई एक अर्थ नहीं हो सकता है। और इसके कारण, जो सर्वोत्तम कार्य हम कर सकते हैं वह यह है कि कुछ अस्पष्ट सीमा या सीमाओं का निर्धारण किसी एक बाइबल के प्रसंग के अर्थ के लिए कर सकते हैं। परन्तु इस दृष्टिकोण में, बाइबल के कई अर्थों को प्रमाणित नहीं किया जा सकता है और उन्हें केवल उसी तरीके से स्वीकार कर लिया जाना चाहिए जैसे कि एक व्यक्ति इसका यह अर्थ निर्धारित करता है और दूसरा व्यक्ति इसका दूसरा अर्थ निर्धारित करता है।

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि कई मसीही विश्वासियों ने पवित्रशास्त्र के शाब्दिक भाव में इसे कई अर्थों में से एक अर्थ स्वीकार करते हुए विश्वास किया है, इसलिए आइए हम अब उस विचार पर ध्यान दें जो यह है कि शाब्दिक भाव पवित्रशास्त्र का एकमात्र अर्थ है।

एकमात्र अर्थ

प्रसिद्ध धर्मशास्त्री थॉमस एक्विनास, जो लगभग 1225 से लेकर 1274 तक रहा, *क्वाड्रिगा* के लिए अधिक उत्तरदायी दृष्टिकोण को लाया। अपने कई पूर्ववर्तियों और समकालीनों के विपरीत, उसने जोर दिया कि पवित्रशास्त्र के शाब्दिक भाव उसके सारे अन्य भावार्थों की नींव थी। उदाहरण के लिए, अपने साहित्य *सुम्मा थियोलोजिका,* अर्थात् केवलमात्र धर्मविज्ञानीय के भाग 1, के प्रश्न 1, के अनुच्छेद 10 में उसने यह जोर दिया है कि किसी एक प्रसंग की प्रत्येक वैध आत्मिक व्याख्या उसके शाब्दिक भाव में निहित थी। उसने यह भी सिखाया कि विश्वास के लिए आवश्यक कोई भी ऐसी बात को उसके आत्मिक अर्थ में सम्प्रेषित नहीं किया गया था जब तक कि

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उसे पवित्रशास्त्र में उसके शाब्दिक भाव में कहीं और सिखा नहीं दिया गया हो। सभी धर्मशास्त्री अक्विनास से सहमत नहीं होंगे जिसने सदैव इन सिद्धान्तों का अनुसरण पवित्रशास्त्र की व्याख्या करते समय किया। परन्तु फिर भी, उसने इस सिद्धान्त के ऊपर जोर दिया कि पवित्रशास्त्र के किसी भी प्रसंग में प्रत्येक भाव उसके शाब्दिक अर्थ के साथ बन्धे होने चाहिए।

यद्यपि अक्विनास के प्रयास बाइबल के आत्मिक अर्थों को उसके शाब्दिक अर्थ में स्थिर करते हुए मानो हम में से बहुतों के लिए सहज भाव को प्रगट करते हैं, उसके दृष्टिकोण को हर किसी के द्वारा अपनाया नहीं गया था। किसी प्रसंग की आत्मिक व्याख्याएँ जो कि उनके शाब्दिक अर्थ से असम्बन्धित हैं, मध्यकालीन कलीसिया के कई धर्म सिद्धान्तों का समर्थन देने के लिए उपयोग की गई हैं। और कलीसिया के अधिकारी यह स्वीकार करते हैं कि उन्हें परमेश्वर-प्रदत विशेष अंतर्दृष्टि आत्मिक अर्थ के लिए प्रदान की गई थी जिसका बाइबल के शाब्दिक अर्थ के साथ कोई लेना देना नहीं था।

परन्तु यूरोप में चौदहवीं से लेकर सत्रहवीं सदी के मध्य पुनर्जागरण ने पवित्रशास्त्र की व्याख्या के लिए नाटकीय परिवर्तन करते हुए मंच को तैयार कर दिया। संक्षेप में, पुनर्जागरण सम्बन्धी विद्वान शास्त्रीय साहित्यिक, दार्शनिक और धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन उनकी मूल भाषाओं में करने लगे। जब उन्होंने ऐसा किया, तो उन्होंने इन मूलपाठों की व्याख्या कलीसिया के अधिकारियों से अलग हो कर इन मूलपाठों के शाब्दिक, ऐतिहासिक भावना पर प्रकाश डालते हुए किया। और ज्यादा समय नहीं बीता जब इस दृष्टिकोण को भी पवित्रशास्त्र के ऊपर लागू कर दिया गया। व्याख्या की रणनीति ने शाब्दिक भाव को उसकी समानता में ला दिया जिसे हमने बाइबल के प्रसंगों का मूल अर्थ कह कर पुकारा है। और इसने इस शाब्दिक मूल अर्थ की केन्द्रीयता और अधिकार पर बल दिया।

> **ठीक है, मध्यकालीन कलीसिया में, ज्यादात्तर विश्वासियों ने यह स्वीकार किया कि परमेश्वर की पवित्रशास्त्र में पूर्ण मंशा चार भागों वाले दृष्टिकोण में पाई जाती है: नैतिक के बाद आने वाले शाब्दिक, लाक्षणिकात्मक, और रहस्यात्मक भाव हैं। इस कारण सोलहवीं सदी के सुधारकों – जिन्हें प्रोटेस्टेन्टवादी कहा गया, में से ज्यादात्तर ने – इस सिद्धान्त के अंशों पर आपत्ति प्रगट की परन्तु विशेषकर इसलिए क्योंकि इसके परिणामस्वरूप जो कुछ निकल कर सामने आया, जो कि शिक्षण की परम्परा रहा था जैसा कि उन्होंने, कुछ घटनाओं में महसूस किया था, ऐसा करना पवित्रशास्त्र को विकृत करना था, या इसकी मूल मंशा या पवित्रशास्त्र के अधिकारिक लेखक को, कलीसिया के अधिकार को बनाए रखने के लिए छिपाना था।**
>
> **- डॉ जेम्स डी. स्मिथ III**

> ***क्वाड्रिगा* या पवित्रशास्त्र का चार भागों वाले भावार्थ का मसीही कलीसिया में एक लम्बी और प्राचीन परम्परा और इतिहास रहा है...और सुधारवादी धर्माचार्यों को सुधारवाद के मध्य में ही उनके समय के कुछ कैथोलिक समकक्षों के द्वारा इस सिद्धान्त के लिए दबाव डाला गया क्योंकि धर्मसुधारक इस बात पर जोर दे रहे थे कि पवित्रशास्त्र के लिए केवल एक ही अर्थ या भाव है। परन्तु, इसकी प्रतिक्रिया में, उदाहरण के लिए, विलियम वॉटकर जैसे लोगों ने कहा कि हम *क्वाड्रिगा* को अस्वीकार नहीं करते हैं, जिसमें ये भाव हैं कि पवित्रशास्त्र के चार भाव हैं; परन्तु हम इस विचार को अस्वीकार करते हैं कि पवित्रशास्त्र के चार अर्थ या भाव हैं। इसमें मात्र एक ही है और यह ऐतिहासिक, शाब्दिक, व्याकरणीय है। परन्तु अन्य तीन संग्रह है या जिसके लिए हम आज ऐसा सोच सकते हैं कि ये उन पंक्तियों के साथ आने वाले कुछ उपयोग हैं। यहाँ पर सोच यह है कि वे एक ही अर्थ में निहित हैं, परन्तु वे उन पंक्तियों को सोचने के लिए उचित रूप हैं कि वे कैसे हम पर जो बाइबल के आज के पाठक होने के नाते एक ही अर्थ को लागू करते हैं। और इसलिए, यह *क्वाड्रिगा* का पूरी तरह से अस्वीकार किया जाना नहीं था, इतना नहीं जितना इसका सुधार किया गया, इसके ऊपर पुन: कार्य किया गया, ताकि इसमें अब उपयोग के लिए विश्वास, आशा और प्रेम की तर्ज पर इन तीन विभिन्न पंक्तियों में केवल एक अर्थ ही हो।**
>
> **- डॉ ब्रूस बाऊगुस**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

पुनर्जागरण के दौरान, प्रोटेस्टेन्टवादी निरन्तर उस विचार को विकसित करते चले गए जो कि अक्विनास के द्वारा प्रसिद्ध हुआ था। परन्तु उन्होंने यह बहस नहीं किया कि सारे के सारे आत्मिक अर्थ केवलमात्र पवित्रशास्त्र के शाब्दिक अर्थ में ही निहित थे। इसकी अपेक्षा, उन्होंने कहा कि एक मूलपाठ के सारे आत्मिक पहलू उनके शाब्दिक भाव के पहलूओं में लेखक के द्वारा उसके मूल श्रोताओं के लिए इच्छित किए हुए थे। उन्होंने विश्वास किया कि पवित्रशास्त्र का शाब्दिक भाव, या मूल अर्थ, दोनों अर्थात् एकमात्र और जटिल है। हम कह सकते हैं कि पुनर्जागरण काल के समय के प्रोटेस्टेन्टवादियों ने शब्दावली "शाब्दिक" की विचाराधारा को व्यापक कर दिया था जिसके कारण इसमें वह सब कुछ सम्मिलित हो गया जिसे लेखक ने चाहा कि पवित्रशास्त्र के "साहित्य" को संप्रेषित करे। परिणामस्वरूप, उलरिच ज़्विंगली, मार्टिन लूथर और जॉन कॉल्विन जैसे अग्रणी विद्वानों ने शाब्दिक या मूल अर्थ के लिए यह सोचा कि मानो इसमें वह सब कुछ सम्मिलित है जो कि बाइबल का प्रत्येक प्रसंग कहना चाहता है। उन्होंने शाब्दिक भाव को जटिल अर्थ के रूप में देखा जिसमें ऐतिहासिक, धर्म सैद्धान्तिक, नैतिक और युगान्तशास्त्रीय पहलू सम्मिलित थे।

पवित्रशास्त्र के शाब्दिक भाव की प्रोटेस्टेन्टवादी विचारधारा को एक तराशे हुए रत्न के साथ तुलना करते हुए प्रगट करना सहायतापूर्ण हो सकता है। तराशे हुए रत्न के बहुमुखी "चेहरे" या "कोण" होते हैं, बिल्कुल वैसे ही कई बहुत छोटे भाव होते हैं जो कि पवित्रशास्त्र के शाब्दिक भाव को सहयोग देते हैं। पवित्रशास्त्र का प्रत्येक प्रसंग उसके लेखक के द्वारा किसी न किसी ऐतिहासिक तथ्य, धर्मसिद्धान्त, नैतिक दायित्व, मोक्ष और युगान्तशास्त्र या ऐसी ही अन्य बातों को सम्प्रेषित करने की मंशा रखता है।

इसके साथ ही, एक रत्न का प्रत्येक कोण विशेष धरातल लिए हुए होता है जो कि उसके पूर्ण सुन्दर होने में योगदान देता है, और कोई भी अकेला कोण यह दावा नहीं कर सकता है कि वही पूरा पत्थर है। इसी तरह से, बाइबल के प्रसंगों के भी विशेष पहलू होते हैं जो कि शाब्दिक भाव के अर्थ में योगदान देते हैं, और इनमें से कोई भी छोटा पहलू यह दावा नहीं कर सकता है कि वही पूर्ण शाब्दिक भाव है।

सरल रूप से कहना, पवित्रशास्त्र के अर्थ बहुमुखी अर्थ वाले होते हैं। प्रत्येक प्रसंग के अर्थ के कई छोटे छोटे हिस्से या पहलू होते हैं जिसे हम शाब्दिक भाव कह कर पुकारते हैं उसमें एकमात्र, एकीकृत अर्थ को सहयोग देते हैं।

> **बाइबल एक गहन अर्थ वाली पुस्तक है। यह एक गहराई वाली पुस्तक है। यह परमेश्वर के मन से आती है, और मैं यह कहने की हिम्मत रखता हूँ कि परमेश्वर का मन बहुत ज्यादा विशाल है, और जो विचार इसमें व्यक्त किए गए हैं वे भी विशाल हैं और उनके कई कोण हैं...इसलिए व्याख्याओं का मूल्यांकन करना मात्र नीचे बैठ जाने का विषय है और स्वयं से यह पूछना है, कि क्या मूलपाठ को किसी एक कोण से पढ़ना एक उचित तरीका है?... और इसलिए केवल आपको बहुलता के लिए क्षमता के संदर्भों में और उस तरीके में चीजों को विभिन्न कोणों से देखने के संदर्भ में औचित्य के विकल्पों पर सोचना होगा, और फिर तथ्य के अर्थ की संभावना के लिए खुले हृदय वाला होना चाहिए और यह जटिल हो सकती है। परिणामस्वरूप, यह वास्तव में आपकी व्याख्या को और ज्यादा समृद्ध कर देती है क्योंकि हो सकता है कि एक प्रसंग कदाचित् मेरी प्रारम्भिक समझ, प्रारम्भिक अभिव्यक्ति से कुछ ज्यादा अर्थ दे रहा हो, और परिणामस्वरुप मैं किसी अन्य द्वारा लिखित लेख को पढ़ कर कुछ सीख सकता हूँ।**
>
> **- डॉ डेरेल एल. बोक**

पवित्रशास्त्र के प्रत्येक प्रसंग के विशेष आकार का धर्मविज्ञान और मसीही जीवन यापन के कई विभिन्न पहलूओं में निहितार्थ होते हैं। इसलिए, यह समझना अत्यन्त आसान है कि क्यों कई लोगों ने कलीसिया के पूरे इतिहास के समयावधि में यह सोचा है कि बाइबल के प्रसंग के बहुमुखी अर्थ होते हैं। परन्तु पवित्रशास्त्र की गहनता के लिए सबसे महत्वपूर्ण दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करना होता है कि जो कुछ हम बाइबल के एक प्रसंग के बारे में कहते हैं वह इसके उस व्याकरण से जुड़ा हुआ होता है जो कि प्राचीन संसार के ऐतिहासिक संदर्भ के बीच में निर्धारित है। और यदि हम बाइबल तक इस तरह के दृष्टिकोण से पहुँचते हैं, तो हम इसके जटिल अर्थ को पता लगाने के लिए उत्तम तरीके से तैयार होंगे जिसकी परमेश्वर और उसके मानवीय लेखकों ने पवित्रशास्त्र के मूल श्रोताओं को सम्प्रेषित करने की मंशा की है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अभी तक पवित्रशास्त्र के अर्थ की जटिलता के प्रति, हमने यह देखा है कि प्रोटेस्टेन्टवादी दृढ़ता से बाइबल के शाब्दिक भाव के महत्व और प्रयोजन को स्वीकार करते हैं। अब इस समय, हम अपने ध्यान को उस ओर मोड़ने के लिए तैयार हैं जिसे हम पवित्रशास्त्र के प्रसंगों को पूरा मूल्य कहते हैं।

पूरा मूल्य

समय-समय पर, इवैन्जेलिकल्स अर्थात् सुसमाचारवादियों ने *सेन्ससुस प्लेनियर* की अभिव्यक्ति का उपयोग किया है, जिसका अर्थ पवित्रशास्त्र के "पूरे भाव" से है। जब हम बाइबल के किसी एक प्रसंग के शाब्दिक भाव या मूल अर्थ की महत्वपूर्णता की पुष्टि करते हैं, तो हम यह स्वीकार करते हैं कि बाइबल के उत्तरोत्तर अंश पवित्रशास्त्र के आरम्भिक अंशों की ओर इस तरह से संकेत करते हैं जो कि शाब्दिक या मूल भाव को बस सामान्य रूप दुहराते नहीं हैं। ऐसा विशेषकर तब सत्य हुआ है जब नये नियम के लेखकों ने इस ओर संकेत किया है कि कैसे मसीह में पुराना नियम पूर्ण हुआ है। नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम के प्रसंगों की उचित तरीके से व्याख्या की है। उन्होंने कभी भी मूल अर्थ का खण्डन नहीं किया है। परन्तु उन्होंने सामान्य रूप से स्वयं को मूल अर्थ तक ही सीमित नहीं रखा। इसकी अपेक्षा, उन्होंने पुराने नियम के प्रसंगों के पूरे भाव को, अर्थात् *सेन्ससुस प्लेनियर* को समझा है। और इसलिए, इस आशय के साथ ही, हम बाइबल के प्रत्येक प्रसंग के "पूरे भाव" या पूरे मूल्य" के बारे में बात करेंगे।

इस श्रृंखला में, हम बाइबल के एक मूलपाठ के पूरे मूल्य की परिभाषा इस तरह से देंगे:

एक मूलपाठ का पूर्ण महत्व, उसके मूल अर्थ से मिलकर बना हुआ होता है, जिसमें उसके सारे बाइबल निहित विस्तारण, और उसके सारे युक्तिसंगत उपयोग सम्मिलित होते हैं।

पवित्रशास्त्र के शाब्दिक भाव का मूल अर्थ, मूलपाठ का सबसे मूलभूत पहलू होता है। बाइबल का विस्तारण वह स्थान है जहाँ पर पवित्रशास्त्र का कोई एक अंश पवित्रशास्त्र के किसी अन्य अंश के ऊपर परोक्ष या अपरोक्ष टिप्पणी करता है। और वैध उपयोग वह आशय अर्थात् निहितार्थ है जो कि पवित्रशास्त्र के पास उसके पाठकों के जीवनों के लिए है।

बाइबल के पूरे मूल्य की इस परिभाषा के अनुसार, हमारा विचार विमर्श तीन भागों में विभाजित होगा। सबसे पहले, हम हमारे ध्यान को मौलिक अर्थ की विचारधारा के ऊपर केन्द्रित करेंगे। दूसरा, हम सारे बाइबल निहित विस्तारण के ऊपर विचार विमर्श करेंगे। और तीसरा, हम हमारे जीवनों के लिए पवित्रशास्त्र के युक्तिसंगत उपयोग का पता लगाएंगे। आइए सबसे पहले मूल अर्थ के साथ आरम्भ करें।

मौलिक अर्थ

पिछले अध्याय में हमने मूल अर्थ को इस तरह से परिभाषित किया था:

वे अवधारणाएँ, व्यवहार और भावनाएँ जिन्हें दिव्य और मानव लेखकों ने संयुक्त रूप से अपने पहले श्रोताओं को सम्प्रेषित करने के लिए दिए गए दस्तावेज़ में इच्छित किया।

जैसा कि हमने कहा, कि एक प्रसंग का मूल अर्थ इसके शाब्दिक भाव के बराबर होता है। और जैसा कि यह परिभाषा दिखाती है, कि मूल अर्थ के बहुमुखी तथ्य होते हैं। पवित्रशास्त्र को उसके पहले श्रोताओं को कई स्तरों पर सम्प्रेषित करना था। यह विचारधाराओं को सम्प्रेषित करता है, जो कि ऐसे विचार हैं जिन्हें मूल श्रोताओं को दिए हुए मूलपाठ में से पहचान करने के लिए सक्षम होना चाहिए। यह ऐसे व्यवहारों को सम्प्रेषित करता है, जो कि ऐसी गतिविधियाँ हैं जिन्हें दिए हुए मूलपाठ में या तो प्रदर्शित किया गया है या फिर नहीं किया गया है। और यह अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को सम्प्रेषित करते हैं जिन्हें या तो मूलपाठ के द्वारा संचारित किया है या फिर मूलपाठ में अभिव्यक्त किया गया है।

आइए निर्गमन 20:13 को देखते हुए यह देखें कि कैसे एक मूलपाठ अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को सम्प्रेषित करता है। जहाँ पर ऐसे लिखा हुआ है:

तू हत्या न करना (निर्गमन 20:13)।

आइए इस प्रसंग को मूल अर्थ की हमारी परिभाषा की शब्दावली में सोचें। अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं ने पहले श्रोताओं को तू हत्या न करना के आदेश के लिए दिव्य और मानव लेखकों ने संयुक्त रूप से सम्प्रेषित करने में क्या इच्छित किया? ठीक है, अवधारणाओं के सम्बन्ध में, यह आयत स्पष्ट रूप से इस विचार को सम्प्रेषित करती है कि गलत तरीके के किसी मानवीय जीवन को लेना मना है। इसमें निहितार्थ यह है कि, यह सम्प्रेषित कर रहा है कि मानवीय जीवन परमेश्वर के सामने मूल्यवान् है। और सच्चाई यह है कि इसके लिए एक आदेश दिए जाने का ढाँचा निर्मित करना पड़ता है जो यह आशय देता है कि परमेश्वर मानवीय प्राणियों के ऊपर प्रभुता सम्पन्न है।

व्यवहारों के सम्बन्ध में, यह आदेश परमेश्वर की ऐतिहासिक गतिविधियों के विवरण का एक हिस्सा है – अर्थात् परमेश्वर स्वयं मूसा को इस आदेश को देने के व्यवहार में सम्मिलित है, और मूसा ने इसे परमेश्वर के लोगों को प्रस्तुत कर दिया। और यह इस बात का संकेत हैं कि परमेश्वर चाहता था कि उसके लोग जिनका मार्गदर्शन मूसा जंगल में से करता हुआ प्रतिज्ञात् भूमि की ओर कर रहा था – जो कि निर्गमन की पुस्तक के मूल श्रोता थे – किसी के साथ हत्या करने जैसे व्यवहार में सम्मिलित न हों।

और भावनाओं के सम्बन्ध में, यह हिस्सा हमें यह शिक्षा देता है कि परमेश्वर हत्या से घृणा करता है, और वह न्याय को बनाए रखने का निर्धारण कर चुका है।

हत्या के विरूद्ध आदेश के मूल अर्थ के बहुमुखी तथ्य थे, जिन्हें स्पष्ट रूप से परमेश्वर और मूसा की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं में इसके मूल श्रोताओं को सम्प्रेषित करने की मंशा की गई थी, और साथ ही उन्हें यह शिक्षा दी गई थी कि परमेश्वर उनके स्वयं की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं के सम्बन्ध में उनसे क्या चाहता था। और कुछ ऐसा ही बाइबल के प्रत्येक प्रसंग के साथ सत्य है।

परिणामस्वरूप, यदि हम मूलपाठ का पूरा मूल्य प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें मूल अर्थ की जटिलताओं की सराहना करनी होगी। यदि हम इन जटिलताओं का अनदेखा कर देते हैं, तो हम जो कुछ पवित्रशास्त्र हमें सिखाता है उसमें से बहुत बड़े हिस्से को खो देंगे।

> **मूलपाठ की व्याख्या करने के लिए धर्मसुधारकों ने दो पद्धतियों को विकसित किया: व्याकरणीय और ऐतिहासिक। एक तरफ तो उन्होंने यह कहा कि मूलपाठ व्याकरणीय रूप से क्या कह रहा है? दूसरी तरफ, वह अपने प्रथम संदर्भ में क्या कहता है? जैसा वे अपने संदर्भ में थे, उन प्रश्नों के लिए ये दो उत्तर उनके लिए मापदण्ड को प्रदान करते हैं। इन सीमाओं के बीच में, कई तरह की विभिन्न व्याख्याएँ मान्य और युक्तिसंगत हैं, और इसका अर्थ यह हुआ कि उन मापदण्डों के बीच जब हम हाँ कहते हैं तो हमें नम्रता का व्यवहार प्रकट करना चाहिए, अन्यथा इसे किसी अन्य तरीके से समझा जाएगा। अब, यदि उनमें से एक व्याख्या सच्चाई से व्याकरणीय रूप में असम्भव है, तो हम कह सकते हैं, कि वह गलत नहीं है। या यदि कोई ऐतिहासिक रूप से असम्भव है – अर्थात् उनका आशय उनके संदर्भ में ऐसा नहीं है – तो इसे निरस्त किया जाना चाहिए। परन्तु इन दो मापदण्डों के बीच में, कई तरह की व्याख्याओं की संभावना है, और जैसा कि मैं कहता हूँ कि, हमें हमारी समझ के प्रति नम्रता का व्यवहार प्रगट करने की आवश्यकता है।**
>
> **- डॉ जॉन औसवाल्ट**

> **पवित्रशास्त्र को स्पष्टया एक से अधिक तरीकों से पढ़ा जा सकता है। अब, इसका यह अर्थ नहीं है कि कुछ भी अर्थ निकाल लिया जाए। कुछ बातें बिल्कुल स्पष्ट कही जा सकती हैं। और उदाहरण के लिए, यही वह स्थान है जहाँ से मुख्य विषय निकल कर बहुत ज्यादा सहायता प्रदान करने के लिए आता है जो कि विश्वास के कथनों में दिया हुआ है। विश्वास का मापदण्ड इसलिए दिया गया है कि वह हमें पवित्रशास्त्र के गलत पठन सुरक्षित रखे। यहाँ पर मूलभूत रूप से कुछ गलत होता है जब हम बाइबल के किसी अन्य व्याख्याकार के साथ संवाद में सम्मिलित होते हैं और हमें इसे बिना किसी अंहकार, पूर्वनिर्धारित धर्मसैद्धान्तिक भावना से करते हैं।**
>
> **- डॉ कैरी विन्जान्ट**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि कैसे मौलिक अर्थ पवित्रशास्त्र के पूरे मूल्य में सहयोग देता है, इसलिए आइए हम अपने ध्यान को बाइबल निहित विस्तारणों की ओर केन्द्रित करें।

बाइबल निहित विस्तारण

बाइबल निहित विस्तारण:

ऐसे स्थान होते हैं जहाँ पर पवित्रशास्त्र का एक अंश या तो परोक्ष में या फिर अपरोक्ष में पवित्रशास्त्र के किसी अन्य अंश के अर्थ के पहलू के ऊपर टिप्पणी करते हैं।

क्योंकि पूरे का पूरा पवित्रशास्त्र प्रेरित और अचूक है, इसलिए ये विस्तार सदैव मौलिक अर्थ की पुष्टि करते और उसके अनुसार होते हैं। कई बार एक विस्तार मूल अर्थ की किसी एक सच्चाई का दुहराव के लिए बोला जाता है। अन्य समयों पर, बाइबल आधारित विस्तारण ऐसी चीजों का स्पष्टीकरण देने के लिए होते हैं जिन्हें पूरी तरह से सही और आभासित रूप में समझा नहीं गया हो। और फिर कई अन्य समयों पर, बाइबल निहित विस्तारण किसी विशेष प्रसंग के अर्थ का विस्तार हो सकता है।

उदाहरण के लिए, कई स्थानों में हत्या के विरूद्ध आज्ञाओं के ऊपर बाइबल निहित विस्तारण किया गया है। आज्ञाओं को सबसे पहले निर्गमन 20:13 में वर्णित किया गया है, जो यह कहती हैं कि:

तू हत्या न करना (निर्गमन 20:13)।

इस प्रसंग का सबसे प्रथम बाइबल निहित विस्तारण को हम मूलभूत रूप से व्यवस्थाविवरण 5 में अक्षरश: एक दुहराव के रूप में उल्लेख करेंगे, जहाँ मूसा ने इस्राएल के राष्ट्र को दस आज्ञाओं के बारे में स्मरण दिलाया है। व्यवस्थाविवरण 5:17 में, पवित्रशास्त्र पुन: कहता है कि

तू हत्या न करना (व्यवस्थाविवरण 5:17)।

इस पुनरावृत्ति ने आज्ञा की पुष्टि की और परमेश्वर के लोगों को उसकी वाचा के संदर्भ में इसे स्मरण दिलाया। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, यहाँ तक कि जब एक बाइबल निहित विस्तारण को पुनरावृत्ति के रूप में कहा गया है, तो यह केवल जो कुछ पहले से ही कहा गया उसकी पुनरावृत्ति ही नहीं है – अपितु विस्तारण का संदर्भ सदैव इसके अर्थ में कुछ न कुछ जोड़ता है। परन्तु फिर भी, यह पहचान करना उपयोगी होगा कि कुछ विस्तारण पुनरावृति के रूप में हैं।

दूसरी श्रेणी का विस्तारण जिसको हमने सूचीबद्ध किया था, वह स्पष्टीकरण था, और हम गिनती 35 में हत्या के विरूद्ध आदेश के स्पष्टीकरण को पाते हैं। इस अध्याय में, मूसा ने हत्या और आकस्मिक मानव हत्या के बीच अन्तर को प्रगट किया है। सुनिए गिनती 35:20-25 में मूसा के द्वारा लिखे हुए वचनों को:

और यदि कोई किसी को बैर से ढकेल दे, वा घात लगाकर कुछ उस पर ऐसे फेंक दे कि वह मर जाए, व शत्रुता से उसको अपने हाथ से ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो जिस ने मारा हो वह अवश्य मार डाला जाए; वह खूनी ठहरेगा... परन्तु यदि कोई किसी को बिना सोचे, और बिना शत्रुता रखे ढकेल दे, वा बिना घात लगाए उस पर कुछ फेंक दे, वा ऐसा कोई पत्थर लेकर, जिस से कोई मर सकता है, दूसरे को बिना देखे उस पर फेंक दे, और वह मर जाए... और मण्डली उस खूनी को लोहू के पलटा लेनेवाले के हाथ से बचाए (गिनती 35:20-25)।

यह स्पष्टीकरण वे सूचनायें प्रदान करता है जो कि हत्या के विरूद्ध आज्ञा को समझने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह स्पष्ट करती है कि गैर कानूनी तरीके से की गई प्रत्येक मानव हत्या का उदाहरण हत्या का उदाहरण है और इस तरह की दुर्घटनाओं को उसी तरीके से दण्डित किया जाना चाहिए जैसे कि एक हत्यारे को दण्डित किया जाता है। जब एक हत्या में पहले से "सोचा गया द्वेष" सम्मिलित हो, अर्थात् जब हत्या दुष्टता से भर कर जानबूझकर और उकसाए हुए तरीके से की गई हो, तो यह आज्ञा कठोर दण्ड की मांग करती है। परन्तु जब

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

हत्या आकस्मिक मानव हत्या हो, तो आज्ञा वास्तव में उस व्यक्ति की हत्या किए जाने से वर्जित करती है, जिसने इस कार्य को किया है।

बाइबल निहित विस्तारण का तीसरा प्रकार जिसको हमने सूचीबद्ध किया, वह विस्तार अर्थात् प्रसार है, जिसमें पवित्रशास्त्र एक विषय या प्रसंग के बारे में अतिरिक्त सूचनायें प्रदान करता है जिसके बारे में वह हवाला दे रहा होता है। हमें मत्ती 5 हत्या के विरूद्ध दी गई आज्ञा का विस्तार देता है, जहाँ यीशु ने उसके दिनों के शास्त्रियों की आज्ञा के अभिप्राय को गलत तरीके से सीमित कर देने के लिए आलोचना की। सुनिए यीशु ने मत्ती 5:21-22 में हत्या की आज्ञा के विरूद्ध क्या शिक्षा दी:

> **तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि हत्या न करना, और जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा: और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई कहे "अरे मूर्ख" वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा (मत्ती 5:21-22)।**

यहाँ, यीशु ने हत्या के विरुद्ध दी हुई आज्ञा को किसी एक मानव जीवन की हत्या को गैरकानूनी तरीके से शारीरिक कार्य होने से बहुत आगे तक विस्तारित कर दिया। यीशु के विस्तारण के अनुसार, अधार्मिकता से भरा हुआ क्रोध भी हत्या के सिद्धान्त का उल्लंघन करता है। क्रोध स्वयं में बुरा नहीं है, परन्तु यह परमेश्वर के चरित्र के उसी पहलू को ठेस पहुँचाता है।

> **इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, यीशु ने पहाड़ी उपदेश में, कई आज्ञाओं को उद्धृत किया है, उनमें से एक, "तुमने सुना है कि यह कहा गया है कि तू हत्या न करना।" और तब वह ऐसे कहता है कि, "परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूँ, यह हत्या करना नहीं, अपितु यह घृणा करना है। यह है वह विषय।" और इसलिए मैं सोचता हूँ कि यीशु के पहाड़ी उपदेश को पढ़ना हमारे लिए अविश्वसनीय तरीके से आज्ञाओं के सच्चे अर्थ को समझने के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि मैं सोचता हूँ कि यही कुछ यीशु कर रहा है...यीशु उस विषय के केन्द्र में पहुँच जाता है। यीशु हमें क्या दिखा रहा है – और मैं सोचता हूँ कि हमें तो केवल इसे अपने जीवन में लागू करना चाहिए जो कुछ यीशु कह रहा है – वह यह है कि हत्या के लिए दी गई आज्ञा, ऐसा विषय नहीं है कि मैं एक अच्छा व्यक्ति हूँ क्योंकि मैंने कभी भी हत्या नहीं की है; मैंने आज्ञा का पालन किया है। यीशु जो कुछ यहाँ पर कह रहा है वह यह है कि – यह हृदय की वह मंशा है जिससे हत्या उठ खड़ी होती है, और यह घृणा है।**
>
> **- डॉ ब्रायन जे. विकर्स**
>
> **यीशु हमें निर्गमन के सिद्धान्तों की ओर चले जाने के लिए आमंत्रित करता है जो कि केवल पाप को करना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु यह कि आप पाप करना ही नहीं चाहते हैं। अर्थात्, यीशु न केवल हमारे व्यवहार में रूचि रखता है अपितु वह हमारे चरित्र में भी रूचि रखता है, इसमें नहीं कि हम क्या करते हैं अपितु इसमें कि हम कौन हैं। इसलिए वह कहता है कि, "तुम सुन चुके हो कि तुम्हें हत्या नहीं करना चाहिए।" यीशु कहता है आप हत्या करना ही नहीं चाहते हैं...इसलिए वह व्यवस्था के हृदय को देखता है। वह सिद्धान्त को देखता है, और सिद्धान्त संस्कृति से ऊपर है और वह हमें उस इच्छा के लिए बुलाता है जिसे परमेश्वर चाहता है, और हम केवल तब ही करते हैं जो हमारे हृदय परमेश्वर के अनुग्रह, उसके राज्य की सामर्थ्य के द्वारा हममें कार्य करने के द्वारा परिवर्तित कर देता है।**
>
> **- डा. क्रेग एस. कीनर**

जब यीशु और अन्य शिक्षक पवित्रशास्त्र की ओर संकेत करते हैं, तो वे सामान्य तौर पर जो कुछ उसमें "लिखा" है, के बारे में बात कर रहे हैं। परन्तु मत्ती 5:21-22 में, यीशु ने जो कुछ पहले "कह" दिया गया था, के बारे में बात की है न कि जो कुछ "लिखा" हुआ था। यह जो कुछ लिखा हुआ को उद्धृत करने का वह सामान्य तरीका था

जिसे यहूदी शिक्षक बोल रहे थे। पुराने नियम को चुनौती देने से बहुत दूर, यीशु पुराने नियम की उन लोकप्रिय व्याख्याओं का खण्डन कर रहा था जो कि पुराने नियम के मूल अर्थ से भटक गई थी।

यह विस्तारण आज्ञा के मूल अर्थ का विस्तार था, क्योंकि यह स्पष्टीकरण से परे चला गया। इसने न केवल स्वयं में आज्ञा के शब्दों के अर्थ की व्याख्या की। इसकी अपेक्षा, यह अन्य प्रसंगों से अतिरिक्त सूचनाओं को आज्ञा के ऊपर लागू करने के लिए इस तरीके से लाया जिसने आज्ञा की मूल मंशा को परमेश्वर के प्रकाशन के व्यापक संदर्भ में प्रकाशित किया। इस पृष्ठभूमि में देखते हुए, यीशु ने यह संकेत दिया कि हत्या के विरूद्ध आज्ञा सदैव परमेश्वर की मानवता के लिए देखरेख की मंशा को प्रकाशित करती है और इसके वास्तविक आशय हत्या की मात्र रोकथाम से अत्यधिक दूर चले गए।

> **ठीक है, परमेश्वर निश्चित रूप से निर्गमन में हत्या करने से वर्जित करता है, और जब यीशु इस आज्ञा को पहाड़ी उपदेश में सम्बोधित करता है, तो वह यह कहता है कि इसमें घृणा और क्रोध भी निहित हैं, जिसे हम अक्सर "हृदय के पाप" कह कर पुकारते हैं। अब यहाँ जो कुछ हो रहा है उसकी व्याख्या करने के लिए कई तरीके हैं। यीशु इस वास्तविक आज्ञा के साथ क्या कर रहा है? कुछ ऐसा कहते हैं कि जबकि निर्गमन में दी गई आज्ञा साधारणतया बाह्य है, परन्तु यीशु इसके ऊपर कार्य कर रहा है और इसमें पूरी तरह से कुछ नया जोड़ रहा है, कुछ ऐसा जो कि दिखाई देने वाला नहीं है और जो कि निर्गमन में दी हुई आज्ञा में निहित नहीं है, और वह व्यवस्था को आन्तरिक बना दे रहा है। मैं सोचता हूँ कि सर्वोत्तम दृष्टिकोण यह कहना है कि यीशु कोई नई बात नहीं कर रहा है, परन्तु वह तो साधारण तौर पर इसमें से उस आशय को निकाल रहा है जो कि इस आज्ञा में पहले से ही निहित है। उदाहरण के लिए, मैं सोचता हूँ कि, जब आप डेकेलॉग को देखें, अर्थात् उसकी दसवीं आज्ञा जो कि, "तू लालच न करना" है, की ओर देखते हैं। यह ऐसी आज्ञा है जो हृदय और हृदय के पापों को सम्बोधित करती है। और उसमें, मैं सोचता हूँ कि, पूरे डेकेलॉग की कुँजी दी गई है, जिसके लिए हमें ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि डेकेलॉग मात्र बाहरी व्यवहारों को ही नहीं अपितु यह हृदय की गतिविधियों, हृदय के पापों, हृदय के उन रवैयों को जो कि इन व्यवहारों के अधीन हैं, को भी सम्बोधित कर रहा है। और इसलिए पहाड़ी उपदेश में जो कुछ यीशु करता है वह यह है कि वह व्यवस्था को उसकी पूरी मंशा के साथ अर्थ दे रहा और पुर्नस्थापित कर रहा है, यहाँ तक कि वह इसकी सारी विकृति को दूर कर रहा है जो कि इतिहास में से इसके साथ साथ आ गई है, परमेश्वर के लोगों के जीवन में से उन आज्ञाओं को पढ़ने के इतिहास में। इस तरह से यीशु खड़ा हुआ, हमें व्यवस्था की सच्ची मंशा दे रहा है और व्यवस्था को उसकी पूर्णता में दिखा रहा है।**
>
> **- डॉ गेय वाटर्स**

जितना अधिक हम पवित्रशास्त्र का अध्ययन करते हैं, उतना अधिक हम देखते हैं कि बाइबल स्वयं को बारी बारी विस्तारित करती जाती है। भविष्यद्वक्ता और भजनकार निरन्तर मूसा की व्यवस्था को उद्धृत करते हैं। यीशु निरन्तर पुराने नियम को उद्धृत करता है। और नए नियम के लेखक बारी बारी ऐसा ही करते हैं। ऐसे समय भी आए हैं, जब हमें यह समझने में कठिनाई आई है कि बाइबल के लेखक कैसे अपने सारांश तक पहुँचे हैं। परन्तु प्रत्येक घटना में, बाइबल के विस्तारण बाइबल के अन्य संदर्भों की पुनरावृत्ति करने के द्वारा, उनका स्पष्टीकरण देने के द्वारा और यहाँ तक कि उनके मूल अर्थ को विस्तार करने के द्वारा पुष्टि करते हैं। और उन्होंने ऐसा पवित्र आत्मा की प्रेरणा के अधीन किया। और इसी कारण से, जब हम पवित्रशास्त्र के अर्थ का पता लगाते हैं, तो हमें उन सभी स्थानों को स्वीकार करना और उनके अधीन होना चाहिए जहाँ पर पवित्रशास्त्र स्वयं को विस्तारित करता है।

अभी तक पवित्रशास्त्र के पूरे मूल्य के प्रति हमने अपने विचार विमर्श में, मौलिक अर्थ और बाइबल निहित विस्तारण को देखा। इसलिए आइए, अब हम अपने ध्यान को बाइबल के एक मूलपाठ में से वैध अर्थात् युक्ति संगत उपयोग को प्राप्त करने के लिए तैयार हैं।

युक्ति संगत उपयोग

हम युक्ति संगत उपयोग की परिभाषा निम्न तरीके से देंगे:

एक प्रसंग के मूल अर्थ और बाइबल निहित विस्तारण का उनके श्रोताओं के ऊपर पड़ने वाले वैचारिक, व्यवहारिक और भावनात्मक प्रभाव

मूल अर्थ और बाइबल निहित विस्तारण प्रेरित होते हैं, और प्रत्येक सदी के सभी विश्वासियों के ऊपर पूरे अधिकार को रखते हैं। इसीलिए पवित्रशास्त्र के सभी युक्ति संगत उपयोगों को बाइबल के मूल अर्थ और विस्तारणों से निकला हुआ और अनुरूप होना चाहिए। परन्तु हमारे उपयोग परमेश्वर की ओर से प्रेरित नहीं होते हैं। हम गलतियाँ करते हैं, और हमारे उपयोगों को सदैव संशोधन और सुधार के अधीन होना चाहिए। यहाँ तक कि उस सीमा तक जहाँ पर हमारे उपयोग पवित्रशास्त्र के अनुकूल सत्य हों जो कि बाइबल के लिए परमेश्वर की मंशा का अंश हैं, और इसलिए यह बाइबल के पूरे मूल्य का अंश हैं।

1689 से *लन्दन बेपटिस्ट कन्फेशन ऑफ फेथ,* अर्थात् लन्दन बेपटिस्ट धर्ममतावलम्बियों के विश्वास का अंगीकार कथन, जो कि प्रोटेस्टेन्टवादियों के धर्मसिद्धान्त का सार है, के अध्याय 1, के भाग 10 में इस विचार को व्यक्त किया गया है:

> **सर्वोच्च न्यायाधीश, जिसके द्वारा सभी धर्मों के विवादों का निवारण, और परिषदों के सारे आदेश, प्राचीन लेखकों के विचार, मनुष्य के सिद्धान्तों को निर्धारित किया जाना है, और व्यक्तिगत् आत्माओं, की जाँच की जानी है, के लिए हमें किसके निर्णय पर आकर रूकना चाहिए, यह और कोई नहीं है अपितु पवित्रशास्त्र है, जो कि आत्मा द्वारा प्रदत्त किया गया है।**

प्रोटेस्टेन्टवादी कलीसियायें लगभग सार्वभौमिक रूप से यह स्वीकार करती हैं कि बाइबल की मानवीय व्याख्या और उपयोग अचूक नहीं हैं। इसलिए, जबकि मानवीय अधिकारी युक्ति संगत हैं, वह तौभी कभी भी सत्य के मूलभूत रूप से अन्तिम न्यायी नहीं हो सकता है। और जबकि पवित्रशास्त्र का उपयोग हमारे जीवनों के लिए उपयोगी है, हमें कभी भी हमारे उपयोगों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए कि मानो वे बाइबल के जैसे अचूक हैं।

> **जब हम प्रचार करते हैं, तो वहाँ पर विवरण देना – अर्थात् एक तरह की व्याख्या करना– और एक उपयोग में लाने वाली बात होती है। परमेश्वर के वचन का अर्थ एक ही होना चाहिए, मूलपाठ का अर्थ एक ही होना चाहिए, और यह सभी सदियों में एक ही जैसे रहना चाहिए। परन्तु बाद में, जब बात मूलपाठ के संदर्भ को देखने की आती है, तो इसके कल और आज के लिए विभिन्न उपयोग हो सकते हैं; यह मापदण्ड की विभिन्नता नहीं है। यह तो उपयोग में मात्र साधारण अन्तर है।**
>
> **- डॉ मिगुएल नुनेज, अनुवादित**
>
> **पवित्रशास्त्र की केवल एक ही व्याख्या हो सकती है। हम उस एक व्याख्या से बहुमुखी उपयोगों को प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु उपयोग को व्याख्या के साथ सच्चा बना रहना चाहिए। हमें सदैव परमेश्वर के वचन की टीका करने का प्रयास करना चाहिए या किसी एक विशेष वचन की, परन्तु हम स्वैर भाष्य अर्थात् व्यक्तिगत् अर्थ निरूपण को करने लग जाते हैं, यह वह समय होता है जब हम अपने विचारों को या हमारी व्याख्याओं को जो कुछ यह कह रहा है उसमें ले आते या उसमें डाल देते हैं। इससे आप बहुत ही ज्यादा दोषपूर्ण उपयोगों को प्राप्त करते हैं, जो कि लोगों का मार्गदर्शन नुक्सान करने के लिए करता है जिसे हो सकता है कि आप शिक्षा दे रहे हों या जिसका आप प्रचार कर रहे हों...और इसलिए व्याख्या को उपयोग के साथ सच्चा रहना चाहिए; उपयोग को व्याख्या के साथ सच्चा रहना चाहिए।**
>
> **- रेव्ह. थॉड जेम्स जूनियर**

इस बात को ध्यान में रखते हुए कि युक्तिसंगत उपयोग पवित्रशास्त्र के पूरे मूल्य का आँशिक हिस्सा है, आइए हम यह देखें कि कैसे अन्य प्रोटेस्टेन्ट परम्परा, जो कि मसीही विश्वास सम्बन्धी *हीडलबर्ग धर्म सैद्धान्तिक प्रश्नोत्तरी* का प्रतिनिधित्व करती है, हत्या के विरूद्ध आज्ञा को लागू करती है। यह धर्म सैद्धान्तिक प्रश्नोत्तरी सोलहवीं सदी में यूरोप में लिखी गई थी ताकि पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं के सहायतापूर्ण अविश्वसनीय सारांश को प्रदान करें। मसीही विश्वास सम्बन्धी *हीडलबर्ग धर्म सैद्धान्तिक प्रश्नोत्तरी* के प्रश्न सँख्या 105 में ऐसा पूछा गया है कि:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

आपके लिए परमेश्वर की छठी आज्ञा में क्या इच्छा है?

और धर्म सैद्धान्तिक प्रश्नोत्तरी यह उत्तर देती है:

मुझे अपने पड़ोसी को अपमानित करना, अपने से छोटा समझना, उससे घृणा करना या उसकी हत्या, न तो अपने विचारों से, शब्दों, अपने देखने, या इशारों से, और निश्चित रूप से वास्तविक कार्यों के द्वारा भी नहीं करनी चाहिए, और मुझे इसके लिए अन्यों को भी उकसाना नहीं चाहिए; इसकी अपेक्षा मुझे बदला लेने की सारी इच्छा को दूर कर देना चाहिए। मुझे स्वयं को भी नुकसान या लापरवाही के खतरे में नहीं डालना चाहिए।

धर्म सैद्धान्तिक प्रश्नोत्तरी हत्या के विरूद्ध आज्ञा की व्याख्या को बाइबल निहित कई विस्तारण के आलोक में देखती है, जिसमें यीशु के मत्ती 5 में दिए हुए साथ ही पौलुस की रोमियों 12 में बदले के ऊपर शिक्षा का विस्तारण भी सम्मिलित है।

जैसा कि हम देखते हैं, इस साधारण सी आज्ञा कि "तू हत्या न करना" का पूरा मूल्य बहुत ही ज्यादा जटिलता और बहुआयामी तथ्यों में हो सकता है। यीशु और पौलुस का अनुसरण करते हुए, *हीडलबर्ग धर्म सैद्धान्तिक प्रश्नोत्तरी* युक्तिसंगत तरीके से इस आज्ञा को न केवल अन्यायपूर्ण तरीके से मानवीय जीवन को लेने के ऊपर लागू होती है, परन्तु इसी के साथ उस सब की बराबरी पर भी जो कि हत्या जैसी यदि ठोस वस्तु न हो तो उसके स्तर पर हो, जैसे कि घृणा और अपमान। इस तरह के उपयोग हत्या के विरूद्ध मनाही के मूल अर्थ के ऊपर आधारित हैं, साथ ही इसके बाइबल आधारित विस्तारण के ऊपर भी, और यह हमारी समकालीन परिस्थितियों में उचित हैं। इन्हीं कारणों से, वे हत्या के विरुद्ध दी हुई आज्ञा के पूरे मूल्य के आँशिक रूप हैं।

ठीक है, यदि आप यह प्रश्न पूछते हैं कि, "वे कौन से युक्तिसंगत तरीके हैं जिन्हें इस आज्ञा के ऊपर लागू किया जाता है कि, 'तू हत्या न करना?" तो यह स्पष्ट है कि इसका अर्थ यह है कि हमें लोगों को नहीं मारना चाहिए। परन्तु इससे यह अनुमान प्राप्त करना अप्रर्याप्त है कि यही सब कुछ यह आज्ञा कह रही है। यीशु ने स्वयं पहाड़ी उपदेश में कहा कि यदि तू अपने भाई के ऊपर क्रोधित है, तो तूने हत्या की है। और वह फिर हमें यह देखने के लिए प्रोत्साहित करता है कि हमारा क्रोध और लोगों के साथ हमारी अप्रसन्नता विशेष कर इस आज्ञा को तोड़ रही है। इस लिए इसे आज के समय में लागू करने के लिए, मैं सोचता हूँ कि हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम यह देखें कि हम लोगों को यह देखने में सहायता करती हैं कि दस आज्ञाएँ आज भी गहनता के साथ हमारे लिए प्रासंगिक हैं क्योंकि वे परमेश्वर के विरुद्ध अपराध की गंभीरता को समझती हैं, और वे हमें सराहना करने के लिए सहायता करती हैं कि यहाँ तक हमारे छोटे से छोटे कार्य भी जिन्हें हम करते हैं, चाहे वह हमारी वासना ही क्यों न हो, या क्रोध, या हमारी भावनायें और हमारी लालसायें ही क्यों न हों, वास्तव में इन सबमें बहुत आगे तक जाने की क्षमता है यदि परमेश्वर इनका निपटारा हृदय-के-स्तर वाले विषयों के रूप में नहीं करता है। इसलिए उस मूलपाठ का उपयोग लोगों को यह देखने के लिए सहायता करना चाहिए कि कैसे किसी भी समस्या, को सिर उठाते ही कुचल दे इससे पहले कि वह और ज्यादा गंभीर हो जाए। और वास्तव में यीशु पहाड़ी उपदेश में कहता है कि, समस्यायें यहाँ तक कि छोटे स्तर पर भी बहुत ज्यादा गंभीर हो सकती हैं।

- डॉ शिमौन विबर्ट

पहाड़ी उपदेश में, यीशु हमें व्यवस्था के ऊपर उसकी अधिकारिक शिक्षा को दे रहा है, और एक बात जो वह वहाँ करता है वह यह है कि वह आज्ञाओं को लेता है और वह अक्षरश: इन्हें हृदय के गहरे स्तर की ओर धकेल देता है। और इसलिए जब वह यह कहता है कि, "तुमने सुना है कि कहा जा चुका है कि, 'तू हत्या न करना,'" तो यह बात सत्य बनी रहती है। परन्तु यीशु इससे आगे चला जाता है और हमें व्यवस्था की सच्ची मंशा को दिखाता है। वह हमें न केवल यह बतलाता है कि हमें हत्या नहीं करनी चाहिए, अपितु यहाँ तक कि हमें हत्या करने वाले शब्दों को भी नहीं बोलना चाहिए जो कि हो सकता है कि घृणा वाले हों, ऐसे शब्द हों जो कि यह कहने के बराबर हो कि, "तूम मूर्ख हो।" या हमें अपने भाई के साथ घृणा नहीं करनी

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

चाहिए। और वह हमें, दूसरे शब्दों में यह दिखा रहा है, कि निर्गमन में व्यवस्था, दस आज्ञायें, केवलमात्र कुछ न करने जैसा नहीं था। वह हमें दिखा रहा था कि वहाँ पर इनकी गहरी मंशा है जिसे हमें समझना चाहिए जब हम व्यवस्था को पढ़ते हैं। और इसलिए व्यवस्था की इन बातों को समझना मात्र खाली निषेध नहीं हैं अपितु इसके साथ ही यह सकारात्मक आज्ञायें भी हैं। यह मात्र यही नहीं है कि, "तू हत्या न करना," अपितु यह कि "जीवन को उन्नत करें"...और इस तरह यीशु पुराने नियम के महत्वपूर्ण अंशों को तोड़ डालता है, वह वास्तव में दो महत्वपूर्ण हिस्सों में तोड़ देता है: अपने पूरे हृदय से परमेश्वर को प्रेम करना और अपने स्वयं के समान अपने पड़ोसी को प्रेम करना। यह प्रेम करने के लिए सकारात्मक आज्ञा है अर्थात् यही व्यवस्था की सच्ची मंशा है।

- **डॉ ब्रैंडन क्रोवी**

इस आधुनिक संसार में, हत्या के विषय से सम्बन्धित बाइबल में सभी तरह के निषेध के लिए मसीही विश्वासियों को स्वयं निर्णय लेना होगा। हमें गर्भपात, इच्छामृत्यु, आत्महत्या, युद्ध, घोर गरीबी और मानव जीवन और गरिमा के प्रति कई अन्य खतरों से निपटना है। प्रत्येक घटना में, हत्या के विरुद्ध आज्ञा हमारे ऊपर जिम्मेदारियों को डाल देती है। और पवित्रशास्त्र के व्याख्याकार होने के नाते हमारा एक लक्ष्य इस बात का पता लगाना है कि वे जिम्मेदारियाँ कौन सी हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम पूर्णता से यह प्रगट करते हैं कि वास्तव में आज्ञाओं का पूरा अर्थ क्या है।

सारांश

अर्थ की जटिलता के ऊपर इस अध्याय में, हमने पवित्रशास्त्र के शाब्दिक भाव के इतिहास को देखते हुए विचार-विमर्श इसके एकमात्र, व्याकरणीय-ऐतिहासिक अर्थ में किया है, और हमने बाइबल आधारित मूलपाठ के पूरे मूल्य को उसके मूल अर्थ, बाइबल निहित विस्तारण, और युक्तिसंगत उपयोगों की शब्दावली में वर्णित किया है।

जैसा कि हमने इस अध्याय में देखा, कि प्रत्येक बाइबल के प्रसंग में एक जटिल मूल अर्थ होता है। और वह इतना ज्यादा जटिल होता है कि वह मूल श्रोताओं की कई विभिन्न तरीकों से अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को स्पर्श करता है। परन्तु इसके अलावा, इस जटिल मूल अर्थ के कई आंशिक सार बनाए जा सकते हैं। मूल अर्थ हमारी समझ के लिए एक नींव, एक अचूक संरचना को प्रदान करती है। परन्तु पवित्रशास्त्र के पूरे मूल्य की जागरूकता प्राप्त करने के लिए, हमें बाइबल आधारित विस्तारणों से मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए और हमें आज के आधुनिक संसार के लिए कई युक्तिसंगत उपयोगों को इससे निर्मित करना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम